10 कर! कर! आतम हित रे प्राणी...

कर! कर! आतम हित रे प्राणी।।
जिन परिणामनि बंध होत है, सो परिणति तज दुखदानी।।टेक।।
कर! कर! आतम हित रे प्राणी।।

कौन पुरुष तुम कहाँ रहत हो, किहि की संगति रति मानी।
जे पर्याय प्रगट पुद्गल मय, ते तैं क्यों अपनी जानी।।१।।
कर! कर! आतम हित रे प्राणी।।

चेतन ज्योति झलकत तुझ मांहीं, अनुपम, सो तैं बिसरानी।
जाकी पटतर लगत आन नहिं, दीप, रतन, शशि, सूरानी।।२।।
कर! कर! आतम हित रे प्राणी।।

आप में आप लखो अपनो पद, 'द्यानत' करि तन मन वाणी।
परमेश्वर पद आप पाइये, यों भाषैं केवलज्ञानी।।३।।
कर! कर! आतम हित रे प्राणी।।

हे प्राणी! अपना आत्म हित करो और जिन परिणामों से बंध होता हैं उन दुःखदायी परिणामों का त्याग करो।।टेक।।

हे चेतन! तुम कहाँ निवास करते हो और किनकी संगति में आनंद मान रहे हो। जो प्रत्यक्ष रूप से पुदगल की पर्याय हैं उसको तुम क्यों आपना मानते हो। इसलिये हे प्राणी! उनको छोड़कर अपना आत्म हित करो।।१।।

तुम्हारी जो चैतन्य ज्योति तुम्हारे में ही दिखाई देती हैं उसे तुम भूल गये हो। वह चैतन्य ज्योति जिसके सामने दीपक, रत्न, सूर्य और चंद्रमा की ज्योति भी फीकी हैं। उस ज्योति को जानो और अपनी आत्मा का हित करो।।२।।

कविवर श्री द्यानतरायजी कहते हैं कि यदि तुम अपने सम्पूर्ण मन–वचन–काय के उपयोग से अपनी आत्मा में आपरूप का श्रद्धान करोगे तो स्वयं परमात्मा बन जाओगे – ऐसा केवलज्ञानी परमात्मा की वाणी में आया हैं इसीलिये हे प्राणी! अपनी आत्मा का हित करो ।।३।।